॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

श्रीयुगलस्तववल्ली

ग्रन्थ प्रणेता

अनन्त श्रीविभूपित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
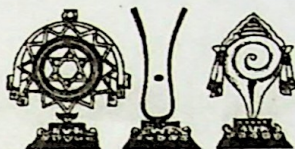
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीयुगलस्तववल्ली

ग्रन्थ प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

चैत्र शुक्ल ६, रविवार, श्रीरामनवमी महोत्सव

वि० सं० २०६६, दिनाङ्क १/४/२०१२ ई०

वि० सं० २०६६ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०८

*   श्रीसर्वेश्वरो जयति   *
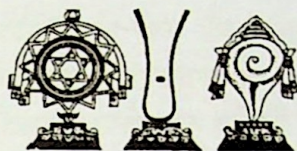
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

समर्पणम्

राधामाधवपादाब्जे विधीशेन्द्रादिसेविते।
युगलस्तवसद्वल्ली सश्रद्धं चाऽर्प्यते वरा॥

चैत्र शुक्ल ६, रविवार
श्रीरामनवमी महोत्सव
वि० सं० २०६९, दिनाङ्क १/४/२०१२ ई०

समर्पकः
श्रीराधामाधवपदारविन्दभक्तिकामः–
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

भगवान् श्रीराधामाधव की भक्ति

श्रीश्यामसुन्दर की कृपा उनकी सेवा में निरन्तर रहने से ही होती है। भगवान् की उपासना दो प्रकार से की जाती है, प्रथम सतत शास्त्राभ्यास द्वितीय ध्यानरूपा। शास्त्रों के गहन चिन्तन से आत्म साक्षात्कार किया जाता है, उपनिषदों में कहा है-''आत्मा वाअरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः'' उस परब्रह्म परमेश्वर का आत्मा में मनन करना चाहिए उसका क्या स्वरूप, कैसे उसका साक्षात्कार हो सकता है। उसके विषय में सिद्धान्तों का श्रवण, मनन एवं स्वाध्याय आत्म साक्षात्कार के लिए आवश्यक हैं। अखिल भुवनमोहन श्रीश्यामसुन्दर को प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन भक्ति है, भक्ति की व्युत्पत्ति-भज् सेवायाम् धातु से ''स्त्रियां क्तिन्'' सूत्र से क्तिन् प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है, इसका अर्थ है श्रद्धा व अनुराग। भगवद् गुणकथा के अध्ययन मात्र से परम प्रभु में भक्ति उत्पन्न होती है। भागवत में स्वयं भगवान् ने ही भक्ति के स्वरूप की व्याख्या की है-''भक्तिः परेशानुभवो विरक्ति-रन्यत्र चैष त्रिक एककालः। प्रपद्यमानस्य यथाश्नतः स्युः तुष्टिः पुष्टिः क्षुदपायोनुघासम्॥''

जैसे भोजन करने वाले व्यक्ति को प्रत्येक ग्रास के साथ तीन प्रकार की तुष्टि (तृप्ति-पुष्टि व क्षुधानिपृत्ति) हो जाती है, उसी प्रकार मनुष्य भगवान् की शरण लेकर उनका भजन करके प्रत्येक पल भगवान् के प्रति प्रेम उनके स्वरूप का अनुभव व अन्य वस्तुओं में वैराग्य की एक साथ प्राप्ति करता है। भक्ति का फल भगवान् की प्राप्ति ही है और भक्त की साधना का स्वरूप भक्ति है। ''श्रीमद्भगवद्गीता'' में चार प्रकार के भक्तों का प्रतिपादन किया है

आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु, ज्ञानी। ज्ञानी भक्त भगवान् का आत्म स्वरूप होता है। श्रीभागवत महापुराण के महारास के समय से पूर्व गोपियों को जब भगवान् जाने की आज्ञा प्रदान करते हैं तो गोपियों का उत्तर सर्वात्म समर्पित भक्त की मनोदशा का वर्णन प्रस्तुत करता हैं। गोपियाँ कहती हैं सोचने का काम चित्त का, चलने का काम पैर का, हम सब आपके चरणों को छोड़कर एक पग भी गमन नहीं कर सकती हैं। भक्तिमती कुन्ती का भाव जो भगवान् से केवल विपत्तियां ही मांगती है, स्वयं कुन्ती ने कहा है-''विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो, भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भव दर्शनम्॥'' भाव यह है कि संकटग्रस्त होने पर ही भगवान् का ध्यान व दर्शन होता हैं। पूज्य गुरुदेव जगद्गुरु श्री ''श्रीजी'' महाराज प्रतिक्षण प्रतिदिन शास्त्राभ्यास व शास्त्रों का नवनिर्माण भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु व निकुंज सहचरी श्रीराधा के निकुंज लीलाओं का भावों का लेखनी के द्वारा संस्कृत में सुललित पद्यों के माध्यम से उनकी लीलाओं का गुणगान करते रहते हैं। महाराजश्री के हृदयपटल पर श्रीराधामाधव प्रभु विराजित हैं। आप भगवान् के स्वभाव स्वरूप और उनके गुणों को उनकी निकुञ्ज लीलाओं को यथार्थ में जानते है उनका वर्णन करते हैं। 'युगलस्तववल्ली' इस ग्रन्थ में राधाष्टक, श्रीसर्वेश्वराष्टक आदि स्तवों की रचना की है जिनका भक्त महानुभाव अध्ययन करके आचार्यश्री के चरणों की कृपा से निःसन्देह भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की भक्ति के भाजन बनेंगे व जीवन का उद्धार करेंगे।

--विजयशंकर पारीक

दि० १/४/२०१२　व्याख्याता-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद जि. अजमेर (राज.)

स्वकीय-भावना

प्रतिक्षण अपने आराध्य सर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान् का स्मरण हो स्तवन हो स्तुति किंवा मधुर पदों से और "श्रीमहावाणी" आदि के गेय पदावलियों से गुणगान, लीलाविहार चिन्तन इत्यादि इन सुभग साधनों से श्रीहरि का प्रतिपल आराधन हो वस्तुतः यही मानव जीवन का सार सर्वस्व है। इसी दृष्टि से "श्रीयुगलस्तववल्ली" प्रस्तुत हुई।

एकमात्र श्रीसर्वेश्वर प्रभु का ही यह प्रेरणा प्रसाद है। बिना उन सर्वान्तरात्मा के अनुग्रह के यह उत्तम कार्य सम्भव नहीं। वे अकारणकरुणावरुणालय श्रीसर्वेश्वर कब किस पर कृपा करदें यह इस जगत् के प्राणियों द्वारा कथमपि अवगत करना सर्वथा असङ्गत है। "यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः" जिस पर उन श्रीराधामाधव प्रभु की अनुकम्पावृष्टि हो जाय वे ही कृपा भाजन होते हैं। और उनके द्वारा वे सर्वज्ञ प्रभु कुछ भी करालें।

यह "श्रीयुगलस्तववल्ली" भी श्रीराधामुकुन्द भगवान् की किञ्चित् गुणगान परक स्तोत्रात्मक लघुकलेवर रूप पुस्तिका है। यदि रसिक भावुक भगवज्जनों ने इसे अवलोकन अनुशीलन कर यत्किञ्चित् भी इससे कुछ ग्रहण किया तो अति सुन्दर है।

हम मन्दमति करही क्या सकते हैं सभी के प्रेरक तो श्रीसर्वेश्वर प्रभु हैं, एतावता उनका ही एकमात्र अनुग्रह रूप प्रसाद है यही स्वकीय भावना है।

चैत्र कृष्ण ६ रविवार — **--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य**

श्रीरामनवमी महोत्सव, वि. सं. २०६६ दि. १/४/२०१२

श्रीयुगलाष्टकम्

(१)

व्रजन्तीं श्रीराधां प्रियसहचरीवृन्दसहितां
निकुञ्जे कालिन्द्याः ललितपुलिने रत्नजटिते।
महारम्ये वृन्दावन-नवधरादिव्यविपिने
समीपे कृष्णस्य प्रचुररससिन्धो हृदि भजे।।

(२)

सदाऽऽराध्यां राधां शरणवरदां कुञ्जमुदितां
सखीवृन्दैः सेव्यां मधुरमधुरां कान्तिभरिताम्।
कृपाकोषां साकं रसिकहरिणा धाम्नि सततं
भजे शुद्धस्वान्ते रसिकरसदां केलिनिरताम्।।

(३)

व्रजेशं रासेशं रसरसिकवृन्दैरनुदिनं
सुसेव्यं श्रीकृष्णं विधि-भव-सुरेन्द्रैश्च नितराम्।
कराम्भोजे वेणुं कनक-मणि-मुक्ताविलसितं
भजामीष्टं राधा-प्रियसहचरीभिर्विलसितम्।।

(४)

नमामीशं कृष्णं नवजलधराङ्गं शुभकर-
महो श्रीराधायाः चरणकमलध्याननिरतम्।

मयूराणां पिच्छैः परमकमनीयं स्मितमुखं
द्रुमाऽऽलीवल्लीनां कुसुमकलिमौलिं वनभुवि ।।

(५)

अहो राधाकृष्णौ सुभगनवरूपौ युगवरौ
महारम्यौ दिव्यौ विपिननवकुञ्जेऽतिगहने ।
प्रिये वृन्दारण्ये तरणितनयासैकततले
स्वकीये स्वान्ते ता-वलिनिकरसेव्यौ प्रविशताम् ।।

(६)

सदा शुद्धौ पूर्णौ हृदयवरणीयौ प्रतिपलं
किशोरौ कुञ्जस्थौ मधुररसरूपौ रसधरौ ।
सखीसेवाऽऽह्लादौ सुर-मुनिसुगीतौ प्रियतमा-
वलभ्यौ ध्यायामि प्रचुररसदाने प्रमुदितौ ।।

(७)

निकुञ्जे श्रीराधां व्रज-सहचरीशां व्रजवने
सरोजानां पुष्पैरनवरतसेव्यां हरियुताम् ।
अथश्रीदिव्याभां प्रणतिरसदात्रीं प्रियकरीं
भजेऽहं प्रत्यूषे रसभरितवृन्दावनभुवि ।।

(८)

रसेशं श्रीकृष्णं व्रततिनवकुञ्जे खगयुते
हसन्तं कालिन्द्याः पुलिनविपिने केलिनिरतम् ।

सखीशं सर्वेशं सकलभुवनेशं सुमनसा
मुदा वन्दे नित्यं परमरससिन्धुं व्रजपतिम् ।।

(६)

श्रीयुगलाष्टकं हृद्यं राधाकृष्णकृपाप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीराधामुकुन्दाष्टकम्

(१)

महादिव्यवृन्दावने नित्यधाम्नि
सदा सौरिकूले लताकुञ्जरम्ये ।
मुदा शोभितं वर्हिपिच्छाऽच्छशीर्षं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

(२)

भवोत्पत्तिहेतुं भवाम्भोधिसेतुं
लसद्-रासलीलं लसच्चारुरूपम् ।
लसत्पाणिवेत्रं लसत्कञ्जमालं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

(३)

शरच्चन्द्रकोटिप्रभादिव्यबिम्ब-
मनन्त-स्मरेशं सुधासिन्धुरूपम् ।

व्रजाधीशकृष्णं व्रजाऽऽलिप्रगेयं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

(४)

प्रपन्नै रसज्ञै-र्महाभावलीनै-
र्विमुक्तप्रलिप्सै र्वरेण्यैः सुभक्तैः ।
सदोपासनीयं प्रियाश्यामकृष्णं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

(५)

व्रजे धाम्नि कुञ्जे सुरम्ये रसेशं
महारासलीलाविधाने प्रसिद्धम् ।
निकुञ्जाऽऽलिवृन्दैः सदा सेव्यमानं
हृदा.नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

(६)

सदा दिव्यकुञ्जे सुरम्ये सुशोभं
सखीवृन्दसेव्यं मुनीन्द्रैः सुगीतम् ।
मयूरैः शुकैश्चारुगीतं रसाब्धिं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

(७)

पुराणादिशास्त्रैः सदा गीयमान-
मनन्यैः सुभक्तैः समाराध्यमानम् ।

व्रजे धाम्नि वृन्दावने राजमानं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

(८)

कदम्बादिकुञ्जे व्रजालिप्रसेव्यं
कराम्भोजवेणुं कराम्भोजवेत्रम् ।
निकुञ्जाऽङ्गणेषु महाकेलिमग्नं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

(९)

श्रीमद्-राधामुकुन्दस्य स्तोत्रं श्रीयुग्मभक्तिदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिम् ।।

श्रीसर्वेश्वराष्टकम्

(१)

व्रजे धाम्नि वृन्दावने कुञ्जमध्ये
सखीवृन्दसेव्यं सभक्तिं सनिष्ठम् ।
खगैश्चारुगेयं प्रपन्नैः प्रपूज्यं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

(२)

अहो कुञ्जलीलारसाब्धौ निमग्नं
मृदङ्गादिघोषैः प्रियं गीयमानम् ।

सखीरङ्गदेवीकरैरर्च्यमानं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

(३)

अनन्तप्रभावं सदा शान्तरूपं
श्रुतिशास्त्रहेतुं जगद्वन्दनीयम् ।
रसब्रह्मकृष्णं रसोत्पत्तिबीजं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

(४)

सदा राधिकाश्रीपदाम्भोजसेवा-
निकुञ्जाऽऽलि सार्द्धं समोदं व्रजन्तम् ।
निकुञ्जे सुरम्ये लता-शाखिपुञ्जे ।
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

(५)

विधीशादिदेवै र्व्रजे मृग्यमाणं
महारासमध्ये नरीनृत्यमानम् ।
निकुञ्जालिवृन्दैः सदा सेवितञ्च
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

(६)

शुकैः सारिकाद्यैर्मयूरैः सुगीतं
श्रुतिग्रन्थवर्ण्यं पुराणेषु गीतम् ।

कुमारैः प्रपूज्यं सुगुञ्जास्वरूपं

कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

(७)

सुधीवृन्दवाणीसुगीतं वरेण्यं

लसच्चारुकेलिं निकुञ्जे सुरम्ये ।

सदा कृष्णरूपं सखीपुञ्जहृद्यं

कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

(८)

निकुञ्जे व्रजन्तं गवां मध्यवासं

सदाहस्तवेणुं सदा केलिरम्यम् ।

अनन्तप्रभावं वरं वेदगीतं

कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

(९)

सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं सर्वेश्वररतिप्रदम् ।

राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीराधास्तवाष्टकम्

(१)

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जमध्ये
लीलाविलासे रसदानशीलाम् ।
सखीसमूहैः परिसेव्यमानां
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

(२)

कलिन्दजाकूलकदम्बकुञ्जे
लीलालसन्तीञ्च व्रजेशराधाम् ।
दिव्यस्वरूपां स्मितमञ्जुहास्यां
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

(३)

विधीशवृन्दारकसेव्यमानां
वेदादिशास्त्रैरुपगीयमानाम् ।
पुराणतन्त्राऽऽगमवर्णिताञ्च
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

(४)

सर्वार्थदात्रीं मुनिवृन्दपूज्यां
कृष्णप्रियां कृष्णसुकेशदिव्याम् ।

अम्भोजमालापरिशोभमानां

नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

(५)

श्रीरङ्गदेवी-ललिता-विशाखा-

चित्रादिकाऽऽलिनवकुञ्जसेव्याम् ।

रासेश्वरीं रासविलासशीलां

नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

(६)

श्रीकृष्णराधां सुभगां निकुञ्जे

लीलाकरीं रासकरीं किशोरीम् ।

प्राणप्रियां नित्यसखीप्रसेव्यां

नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

(७)

गोविन्द ! गोपाल ! हरे ! वदन्तीं

प्रभातकाले यमुनाप्रतीरे ।

रक्ताब्जपुष्पाऽच्छसुगुच्छहस्तां

नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

(८)

व्रजाऽऽलिवृन्दैश्च सदा सुगेयां

श्रीधाम्नि वृन्दाविपिने व्रजन्तीम् ।

ग्लौचन्द्रिकाशोभितदिव्यरूपां
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

(९)

राधास्तवाष्टकं गेयं राधाभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीसर्वेश्वर - स्तव

(१)

विधीशेन्द्रशेषैः समाराध्यमानं
कुमारैः प्रसेव्यं मुनीन्द्रादि-सद्भिः ।
भवोत्पत्तिहेतुं भवाऽम्भोधिसेतुं
भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

(२)

प्रियाराधिकाश्रीप्रभाशोभमानं
व्रजे दिव्यकुञ्जे नरीनृत्यमानम् ।
परं ब्रह्म कृष्णं हृषीकेशमीशं
भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

(३)

कराम्भोजवेणुं प्रियं पङ्कजाक्षं
कदम्बाऽऽम्र-जम्बू-निकुञ्जेषु मध्ये

सखीवृन्दसेव्यं खगैर्गीयमानं

भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

(४)

महादिव्यवृन्दावने नित्यधाम्नि

सदा सौरिकूले लताकुञ्जरम्ये ।

मुदा शोभितं बर्हिपिच्छाऽच्छशीर्षं

भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

(५)

असीमप्रभं धेनुयूथे मनोज्ञं

महारासलीलानितान्तप्रसन्नम् ।

प्रियाऽऽनन्दसिन्धौ निमग्नं रसेशं

भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

(६)

सर्वेश्वरस्तवः श्रेयान् सर्वेश्वररतिप्रदः ।

राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

श्रीयुगलस्तववल्ली

राधाकृष्णं नमस्कृत्य ध्यात्वा श्रीमद्गुरुं हृदा।
युगलस्तवबल्लीयं रच्यते रसदायिका।।

श्रीयुगलाष्टकम्

(१)

व्रजन्तीं श्रीराधां प्रियसहचरीवृन्दसहितां
निकुञ्जे कालिन्द्याः ललितपुलिने रत्नजटिते।
महारम्ये वृन्दावन-नवधरादिव्यविपिने
समीपे कृष्णस्य प्रचुररससिन्धो र्हृदि भजे।।

परम रमणीय श्रीधामवृन्दावन के नित्य नव धरणी के अतिदिव्य वनक्षेत्र में तथा नानाविध रत्नों से जटित श्रीयमुनाजी के परम मनोहर पुलिनवर्ती श्रीनिकुञ्ज में महारस सागर भगवान् श्रीकृष्ण के समीप में अपनी अतिप्रिय सखी परिकर सहित विहार परायण श्रीराधा प्रियतमा को अपने हृदय में उनका भजन करते हैं।।१।।

(२)

सदाऽऽराध्यां राधां शरणवरदां कुञ्जमुदितां
सखीवृन्दैः सेव्यां मधुरमधुरां कान्तिभरिताम्।
कृपाकोषां साकं रसिकहरिणा धाम्नि सततं
भजे शुद्धस्वान्ते रसिकरसदां केलिनिरताम्।।

श्रीधामवृन्दावन में रसिकेश्वर श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण भगवान् के नित्य संग में ललित लीला निरत परम कृपामयी, शरणागत भक्तों को उत्तम मनोरथ प्रदान करने वाली, दिव्यप्रभा से परिपूर्ण और रसिक भक्तों को परमानन्द प्रदायिनी अपनी नित्य सखि परिकर से परिसेवित, मधुरातिमधुरस्वरूप परमाराध्या सर्वेश्वरी श्रीराधा का अपने शुद्धस्वरूप अन्तःकरण से सदा-सर्वदा भजन करते हैं॥२॥

(३)

व्रजेशं रासेशं रसरसिकवृन्दैरनुदिनं
सुसेव्यं श्रीकृष्णं विधि-भव-सुरेन्द्रैश्च नितराम्।
कराम्भोजे वेणुं कनक-मणि-मुक्ताविलसितं
भजामीष्टं राधा-प्रियसहचरीभिर्विलसितम्॥

ब्रह्मा, शङ्कर, इन्द्रादि देवों द्वारा सर्वदा परिसेवित तथा रसिक महानुभावों से सेवित व्रजेश्वर रासविहारी श्रीकृष्ण जो अपने करकमलों में वेणु धारण किये हुए एवं स्वर्ण मणियों से सुशोभित एवं अनन्य सखियों से सेवित परमाराध्या श्रीराधा सहित अपने आराधनीय इष्ट उनका भजन करते हैं॥३॥

(४)

नमामीशं कृष्णं नवजलधराङ्गं शुभकर-
महो श्रीराधायाः चरणकमलध्याननिरतम्।
मयूराणां पिच्छैः परमकमनीयं स्मितमुखं
द्रुमाऽऽलीवल्लीनां कुसुमकलिमौलिं वनभुवि॥

श्रीवृन्दावन की सुरम्य धरा पर परम विस्मय पूर्ण यह

आनन्द है कि परमाह्लादिनी स्वरूपा श्रीराधा के श्रीचरणारविन्दों के ध्यान में अभिरत एवं मयूरपिच्छ से शोभायमान और विविध तरुवरों लताओं के सुगन्धित पुष्पकलियों से निर्मित सुन्दर मुकुट को धारण किये हुए एवं मन्द हास्य युक्त श्रीमुखारविन्द जिनका है ऐसे कल्याणकारी नवीनमेघ घटा के सदृश स्वरूप सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् को प्रणाम करते हैं॥४॥

(५)

अहो राधाकृष्णौ सुभगनवरूपौ युगवरौ
महारम्यौ दिव्यौ विपिननवकुञ्जेऽतिगहने।
प्रिये वृन्दारण्ये तरणितनयासैकततले
स्वकीये स्वान्ते ता-वलिनिकरसेव्यौ प्रविशताम्॥

अति कमनीय श्रीवृन्दावन की यमुना पुलिन पर परम रमणीय दिव्यतम वन प्रदेश की अति गहन नवनिकुञ्ज में सुन्दर नवीन स्वरूप में युगलकिशोर श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण भगवान् जो परम अद्भुत विस्मय स्वरूप हैं और सखि परिकर से परिसेवित ऐसे वे श्रीयुगल प्रभु अपने हृदय में सर्वदा विराजमान हों॥५॥

(६)

सदा शुद्धौ पूर्णौ हृदयवरणीयौ प्रतिपलं
किशोरौ कुञ्जस्थौ मधुररसरूपौ रसधरौ।
सखीसेवाऽऽह्लादौ सुर-मुनिसुगीतौ प्रियतमा-
वलभ्यौ ध्यायामि प्रचुररसदाने प्रमुदितौ॥

सदा शुद्ध स्वरूप पूर्ण परब्रह्मरूप और भक्तों के हृदय में सर्वदा अवधारणीय एवं मधुरातिमधुर आनन्दस्वरूप, देवेन्द्र-मुनीन्द्रों

द्वारा वर्णन किये गये तथा परमानन्द प्रदान करने में सदा प्रसन्न और सखि परिकर द्वारा की गई सेवा से अति आह्लादित ऐसे अलभ्य युगलकिशोर प्रियाप्रिय जो निकुञ्ज में विराजित, उनका अपने अन्तःकरण में ध्यान करते हैं॥६॥

(७)

निकुञ्जे श्रीराधां व्रज सहचरीशां व्रजवने
सरोजानां पुष्पैरनवरतसेव्यां हरियुताम् ।
अथश्रीदिव्याभां प्रणतिरसदात्रीं प्रियकरीं
भजेऽहं प्रत्यूषे रसभरितवृन्दावनभुवि ॥

व्रज में रस स्वरूप श्रीवृन्दावन धाम की निकुञ्ज में दिव्य प्रभा से सुशोभित शरणागत रसिक भक्तों को आनन्द प्रदायिनी सबका हित करने वाली व्रज सखीवृन्दों की ईश्वरी, कमलपुष्पों से जिनकी सेवा की जाती है, एवं अपने प्रियतम श्रीकृष्ण भगवान् के सहित प्रियतमा श्रीराधा का प्रभात समय में हम भजन करते हैं॥७॥

(८)

रसेशं श्रीकृष्णं व्रततिनवकुञ्जे खगयुते
हसन्तं कालिन्द्याः पुलिनविपिने केलिनिरतम् ।
सखीशं सर्वेशं सकलभुवनेशं सुमनसा
मुदा वन्दे नित्यं परमरससिन्धुं व्रजपतिम् ॥

विविध पक्षी समूह युक्त नानाविध नवनवायमान लता-कुञ्जों में यमुना के समीपस्थ पुलिनवर्ती वनोपवनों में विहसन पूर्वक सखीवृन्दों के ईश सर्वेश्वर समस्त जगत् के एकमात्र परमेश्वर महारससागर व्रजपति रसेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् को उल्लासपूर्वक

अपने मानस से प्रतिदिन वन्दना करते हैं।।८।।

(९)

श्रीयुगलाष्टकं हृद्यं राधाकृष्णकृपाप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

भगवान् श्रीराधाकृष्ण की अनुकम्पा प्रदायक यह सुन्दर युगलाष्टक जिसकी रचना हमें निमित्त बनाकर हुई है। यह श्रीयुगलकिशोर भगवान् के कृपा का प्रसाद रूप है।।९।।

श्रीराधामुकुन्दाष्टकम्

(१)

महादिव्यवृन्दावने नित्यधाम्नि
सदा सौरिकूले लताकुञ्जरम्ये ।
मुदा शोभितं वर्हिपिच्छाऽच्छशीर्षं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

नित्य धाम परम दिव्य श्रीवृन्दावन में यमुना के तटीय भाग में विविध लता-तरुवरों की अति रमणीय कुञ्ज में मयूर पिच्छ (मोरपङ्ख) के धारण करने पर अति मनोहर जिनका श्रीमस्तक शोभायमान है ऐसे व्रजेश्वर श्रीराधामुकुन्द भगवान् को उल्लासपूर्वक मनसा, वाचा, कर्मणा प्रणाम समर्पित करते हैं।।१।।

(२)

भवोत्पत्तिहेतुं भवाम्भोधिसेतुं
लसद्-रासलीलं लसच्चारुरूपम् ।

लसत्पाणिवेत्रं लसत्कञ्जमालं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

इस निखिल जगत् उत्पत्ति के एकमात्र कारण रूप, इस सम्पूर्ण संसार सागर के सेतु अर्थात् परम आधार एवं जो अत्यन्त सौन्दर्य-माधुर्य सम्पन्न रासलीला निरत और सुन्दर कमल पुष्पमाला से सुशोभित और अति सुभग लकुट अपने सुकोमल करकमल में धारण किये हुए श्रीराधामुकुन्द भगवान् का हृदय से अभिनमन करते हैं॥२॥

(३)

शरच्चन्द्रकोटिप्रभादिव्यबिम्ब-
मनन्त-स्मरेशं सुधासिन्धुरूपम् ।
व्रजाधीशकृष्णं व्रजाऽऽलिप्रगेयं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

शारदीय कोटि-कोटि चन्द्रमा की प्रभा से भी परमोत्तम अति दिव्य श्रीमुखारविन्द की कमनीय शोभा है। अनन्त-अनन्त कामदेवों से भी सुन्दर जो सर्वेश्वर हैं और दिव्यामृत के सिन्धु स्वरूप व्रजसखी परिकर से जिनके लोकोत्तर दिव्य गुण समूह का परिवर्णन किया जाता है ऐसे व्रजेश्वर श्रीराधामुकुन्द भगवान् को अपने हृदय से नमन करते हैं॥३॥

(४)

प्रपन्नै रसज्ञै-र्महाभावलीनै-
र्विमुक्तप्रलिप्सै र्वरेण्यैः सुभक्तैः ।
सदोपासनीयं प्रियाश्यामकृष्णं

हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

जो उत्तम महाभाव में निमग्न रहते हैं एवं सांसारिक कामनाओं का जिन्होंने परित्याग कर दिया है ऐसे शरणागत रसस्वरूप के विज्ञ, परम श्रेष्ठ भक्त महानुभाव हैं, उनके द्वारा सर्वदा उपासनीय प्रिया-श्याम श्रीकृष्ण व्रजाधिपति श्रीराधामुकुन्द भगवान् उनको अपने चित्त से अभिनमन करते हैं।।४।।

(५)

व्रजे धाम्नि कुञ्जे सुरम्ये रसेशं
महारासलीलाविधाने प्रसिद्धम् ।
निकुञ्जाऽऽलिवृन्दैः सदा सेव्यमानं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

श्रीव्रजधाम की अति कमनीय कुञ्ज में महारासलीला करने में अभिरत परम कुशल एवं निकुञ्ज सखि परिकर से सदा सेवित ऐसे रसेश्वर व्रजेश्वर श्रीराधामुकुन्द भगवान् का अपने अन्तर्मानस से प्रणमन करते हैं।।५।।

(६)

सदा दिव्यकुञ्जे सुरम्ये सुशोभं
सखीवृन्दसेव्यं मुनीन्द्रैः सुगीतम् ।
मयूरैः शुकैश्चारुगीतं रसाब्धिं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

अति सुन्दर दिव्य कुञ्ज में सखीवृन्दों से परिसेवित ऋषि-मुनीन्द्रों के द्वारा जिनके स्वरूप का सुन्दर वर्णन किया जाता है।

श्रीवृन्दावन के मयूरों-शुकों (तोताओं) के द्वारा जिन श्रीहरि का गान किया जाता है ऐसे रससिन्धु व्रजेश्वर श्रीराधामुकुन्द भगवान् का अपने मन से प्रणाम अर्पित करते हैं॥६॥

(७)

पुराणादिशास्त्रैः सदा गीयमान-
मनन्यैः सुभक्तैः समाराध्यमानम् ।
व्रजे धाम्नि वृन्दावने राजमानं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

पुराणादि शास्त्रों से सदा जिनका विविध रूप से गान किया जाता है। अनन्य रसिक भक्तों द्वारा आराधनीय हैं एवंविध व्रजस्थ श्रीवृन्दावनधाम सुशोभित व्रजाधिपति श्रीराधामुकुन्द भगवान् का अपने अन्तर्हृदय से सश्रद्ध प्रणाम करते हैं॥७॥

(८)

कदम्बादिकुञ्जे व्रजालिप्रसेव्यं
कराम्भोजवेणुं कराम्भोजवेत्रम् ।
निकुञ्जाऽङ्गणेषु महाकेलिमग्नं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

कदम्बादि तरुवरों की कुञ्ज में व्रजगोपीजनों द्वारा सेवित एवं जिनके एक करारविन्द में वेणु धारण की हुई तथा द्वितीय कर कमल में लकुट सुशोभित है ऐसे श्रीहरि श्रीनिकुञ्ज के मनोहर प्राङ्गण में दिव्य क्रीडा में तल्लीन हैं ऐसे व्रजेश्वर श्रीराधामुकुन्द भगवान् को पुनः पुनः कोटि-कोटि प्रणाम है॥८॥

हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

जो उत्तम महाभाव में निमग्न रहते हैं एवं सांसारिक कामनाओं का जिन्होंने परित्याग कर दिया है ऐसे श.रणागत रसस्वरूप के विज्ञ, परम श्रेष्ठ भक्त महानुभाव हैं, उनके द्वारा सर्वदा उपासनीय प्रिया-श्याम श्रीकृष्ण व्रजाधिपति श्रीराधामुकुन्द भगवान् उनको अपने चित्त से अभिनमन करते हैं।।४।।

(५)

व्रजे धाम्नि कुञ्जे सुरम्ये रसेशं
महारासलीलाविधाने प्रसिद्धम् ।
निकुञ्जाऽऽलिवृन्दैः सदा सेव्यमानं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

श्रीव्रजधाम की अति कमनीय कुञ्ज में महारासलीला करने में अभिरत परम कुशल एवं निकुञ्ज सखि परिकर से सदा सेवित ऐसे रसेश्वर व्रजेश्वर श्रीराधामुकुन्द भगवान् का अपने अन्तर्मानस से प्रणमन करते हैं।।५।।

(६)

सदा दिव्यकुञ्जे सुरम्ये सुशोभं
सखीवृन्दसेव्यं मुनीन्द्रैः सुगीतम् ।
मयूरैः शुकैश्चारुगीतं रसाब्धिं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ।।

अति सुन्दर दिव्य कुञ्ज में सखीवृन्दों से परिसेवित ऋषि-मुनीन्द्रों के द्वारा जिनके स्वरूप का सुन्दर वर्णन किया जाता है।

श्रीवृन्दावन के मयूरों-शुकों (तोताओं) के द्वारा जिन श्रीहरि का गान किया जाता है ऐसे रससिन्धु व्रजेश्वर श्रीराधामुकुन्द भगवान् का अपने मन से प्रणाम अर्पित करते हैं॥६॥

(७)

पुराणादिशास्त्रैः सदा गीयमान-
मनन्यैः सुभक्तैः समाराध्यमानम् ।
व्रजे धाम्नि वृन्दावने राजमानं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ॥

पुराणादि शास्त्रों से सदा जिनका विविध रूप से गान किया जाता है। अनन्य रसिक भक्तों द्वारा आराधनीय हैं एवंविध व्रजस्थ श्रीवृन्दावनधाम सुशोभित व्रजाधिपति श्रीराधामुकुन्द भगवान् का अपने अन्तर्हृदय से सश्रद्ध प्रणाम करते हैं॥७॥

(८)

कदम्बादिकुञ्जे व्रजालिप्रसेव्यं
कराम्भोजवेणुं कराम्भोजवेत्रम् ।
निकुञ्जाऽङ्गणेषु महाकेलिमग्नं
हृदा नौमि राधामुकुन्दं व्रजेशम् ॥

कदम्बादि तरुवरों की कुञ्ज में व्रजगोपीजनों द्वारा सेवित एवं जिनके एक करारविन्द में वेणु धारण की हुई तथा द्वितीय कर कमल में लकुट सुशोभित है ऐसे श्रीहरि श्रीनिकुञ्ज के मनोहर प्राङ्गण में दिव्य क्रीडा में तल्लीन हैं ऐसे व्रजेश्वर श्रीराधामुकुन्द भगवान् को पुनः पुनः कोटि-कोटि प्रणाम है॥८॥

(६)

श्रीमद्-राधामुकुन्दस्य स्तोत्रं श्रीयुग्मभक्तिदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिम् ।।

युगलकिशोर श्रीराधामुकुन्द भगवान् की अनन्य भक्ति प्रदायक यह स्तोत्र जिसका प्रणयन हमें केवल मात्र निमित्त बनाकर उन्हीं श्रीयुगल का यह कृपा प्रसाद है।।६।।

श्रीसर्वेश्वराष्टकम्

(१)

व्रजे धाम्नि वृन्दावने कुञ्जमध्ये
सखीवृन्दसेव्यं सभक्तिं सनिष्ठम् ।
खगैश्चारुगेयं प्रपन्नैः प्रपूज्यं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

व्रजमण्डल में सुशोभित श्रीधाम वृन्दावन की कुञ्ज के मध्यवर्ती स्थान पर सखिजनों से सेवित विविध पक्षीगणों से गीयमान एवं शरणागत रसिकों भक्तों से पूजित हैं और भक्ति-निष्ठा पूर्वक कृपार्णव श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।।१।।

(२)

अहो कुञ्जलीलारसाब्धौ निमग्नं
मृदङ्गादिघोषैः प्रियं गीयमानम् ।
सखीरङ्गदेवीकरैरर्च्यमानं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

यह विस्मयपूर्ण आनन्द का प्रसङ्ग है कि सर्वान्तरात्मा श्रीसर्वेश्वर निकुञ्ज लीला रससिन्धु एवंविध तल्लीन है और जिस निकुञ्ज में सखीवृन्दों द्वारा मृदङ्गादि माङ्गलिक नाना वाद्यों का अतिप्रिय घोष करते हुए श्रीप्रभु के गुणगणों का मधुर वर्णन किया जा रहा है और श्रीनिम्बार्क भगवान् जो निकुञ्ज सखी श्रीरङ्गदेवी स्वरूप में परम शोभायमान है जिनके द्वारा श्रीप्रभु की अनुपम अर्चना की जा रही है। ऐसे अनुपम कृपा के अनन्तसिन्धु श्रीसर्वेश्वर प्रभु को प्रतिपल नमन करते हैं॥२॥

(३)

अनन्तप्रभावं सदा शान्तरूपं
श्रुतिशास्त्रहेतुं जगद्वन्दनीयम्।
रसब्रह्मकृष्णं रसोत्पत्तिबीजं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम्॥

जिनका असीम प्रभाव है, सर्वदा शान्त स्वरूप हैं समस्त उपनिषदों द्वारा जिनका अनेक प्रकार से निरूपण किया जाता है, सम्पूर्ण श्रुति मन्त्र के एकमात्र आधाररूप हैं। इस जगत् के सभी भक्त आपकी अभिवन्दना करते हैं। आनन्द-उत्पत्ति के एकमात्र बीजरूप अर्थात् कारण रूप हैं ऐसे रसब्रह्म श्रीकृष्ण जो सर्वेश्वर कृपा के धाम है उनको नित्य ही सर्वात्मना अभिनमन करते हैं॥३॥

(४)

सदा राधिकाश्रीपदाम्भोजसेवा-
निकुञ्जाऽऽलि सार्द्धं समोदं व्रजन्तम्।
निकुञ्जे सुरम्ये लता-शाखिपुञ्जे।

कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

सतत अपनी ही अभिन्न स्वरूपा रासेश्वरी श्रीराधा के युगल पदारविन्दों की परिचर्या निकुञ्ज सखियों के साथ में प्रमुदित होते हुए करते हैं और कदम्ब-कदली-तमाल-जम्बू-आम्र आदि की दिव्य कमनीय निकुञ्ज में विहरण करते हुए कपार्णव श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नित्यशः सर्वविधा प्रणाम करते हैं।।४।।

(५)

विधीशादिदेवै र्व्रजे मृग्यमाणं
महारासमध्ये नरीनृत्यमाणम् ।
निकुञ्जालिवृन्दैः सदा सेवितश्च
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

ब्रह्मा-शंकर प्रभृति देवों द्वारा जिनका व्रज में अन्वेषण किया जा रहा है एवं निकुञ्ज सखि परिकर से सेवित महारासलीला में कला पूर्ण नृत्य करते हुए अति सुशोभित ऐसे परम कृपा के धाम श्रीसर्वेश्वर प्रभु को दैनिक साष्टाङ्ग प्रणति अर्पित करते हैं।।५।।

(६)

शुकैः सारिकाद्यैर्मयूरैः सुगीतं
श्रुतिग्रन्थवर्ण्यं पुराणेषु गीतम् ।
कुमारैः प्रपूज्यं सुगुञ्जास्वरूपं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

तोता, मैना, मोर आदि पक्षी समूह से जिनके मधुरातिमधुर नाम का सुन्दर रूप से गान किया जाता है तथा श्रुति-पुराणादि सद्ग्रन्थों से जिनका अनेक रूप से वर्णन हो रहा है। श्रीसनक-

सनन्दन-सनातन-सनत्कुमारों से परिपूजित है, जिन्होंने श्रीसनकादिकों के लिए दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित गुञ्जाफलसम सूक्ष्म शालग्राम स्वरूप धारण किया है ऐसे श्रीकृष्ण ही श्रीसर्वेश्वर प्रभु के रूप में ही सुशोभित है ऐसे कृपाधाम श्रीप्रभु को नित्यप्रति अभिनमन करते हैं।।६।।

(७)

सुधीवृन्दवाणीसुगीतं वरेण्यं
लसच्चारुकेलिं निकुञ्जे सुरम्ये ।
सदा कृष्णरूपं सखीपुञ्जहृद्यं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

विद्वज्जनों की मधुर वाणी से जिनके स्वरूप का सुभग गान किया जाता है ऐसे परम वरेण्य एवं सुरमणीय निकुञ्ज में ललित लीला निरत एवं सखीवृन्दों पर सदा प्रसन्न और नवीन मेघ के सदृश श्याम स्वरूप में शोभायुक्त कृपाकोष श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नियमित नमन करते हैं।।७।।

(८)

निकुञ्जे व्रजन्तं गवां मध्यवासं
सदा हस्तवेणुं सदा केलिरम्यम् ।
अनन्तप्रभावं वरं वेदगीतं
कृपाधाम सर्वेश्वरं नौमि नित्यम् ।।

श्रीवृन्दावन की श्रीनिकुञ्ज में विहरण करते हुए और कोटि-कोटि गोवृन्द के मध्य में आनन्द पूर्वक सुशोभित हैं। सर्वदा सुन्दर वंशी को अपने सुकोमल करारविन्द में धारण किये हुए

सर्वदा सुललित लीलाओं के करने पर परम शोभान्वित हैं वेदादि शास्त्र सतत आपका विविध रूप से गुणगान करते हैं। अनन्त असीम जिनका प्रभाव है ऐसे अतीव सुन्दर कृपा के अनन्त आगार श्रीसर्वेश्वर को प्रतिपल अभिवन्दन करते हैं॥८॥

(९)

सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं सर्वेश्वररतिप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की भक्ति प्रदायक यह श्रीसर्वेश्वराष्टक स्तोत्र जिसका प्रणयन उनकी ही कृपाजन्य यहाँ प्रस्तुत है।।९॥

श्रीराधास्तवाष्टकम्

(१)

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जमध्ये
लीलाविलासे रसदानशीलाम् ।
सखीसमूहैः परिसेव्यमानां
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

श्रीवृन्दावन की नित्य निकुञ्ज के मध्य भाग में क्रीडा के क्रम में दिव्यानन्द प्रदायक सखी समूह के द्वारा परिसेवित भगवान् श्रीकृष्ण सहित सर्वेश्वरी श्रीराधा को प्रणाम करते हैं।।१॥

(२)

कलिन्दजाकूलकदम्बकुञ्जे
लीलालसन्तीश्च व्रजेशराधाम् ।

दिव्यस्वरूपां स्मितमञ्जुहास्यां

नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

श्रीयमुना के तट प्रदेश में कदम्ब-कुञ्ज में लावण्यमयी लीला विहार करती हुई दिव्य स्वरूपा मन्द हास्ययुक्त, व्रजेश्वर श्रीकृष्ण की प्राणप्रिया श्रीराधा को उन्हीं श्रीहरि के साथ अभिनमन करते हैं।।२।।

(३)

विधीशवृन्दारकसेव्यमानां

वेदादिशास्त्रैरुपगीयमानाम् ।

पुराणतन्त्राऽऽगमवर्णिताञ्च

नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

ब्रह्मा-शिव आदि देववृन्दों से संसेवित, समस्त वेदादि शास्त्र जिनका प्रतिपादन करते हैं। पुराण-तन्त्रादि आगम शास्त्रों में जिनका अनिर्वचनीय वर्णन है। इस प्रकार श्रीकृष्ण भगवान् के संग में सुशोभित सर्वेश्वरी श्रीराधा को सर्वरूपेण अभिनमन करते हैं।।३।।

(४)

सर्वार्थदात्रीं मुनिवृन्दपूज्यां

कृष्णप्रियां कृष्णसुकेशदिव्याम् ।

अम्भोजमालापरिशोभमानां

नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

भक्तों के उत्तम मनोरथों को प्रदान परायण एवं मुनिवृन्दों द्वारा अन्तर्मनसा समर्चित और श्याम स्वरूप कमनीय केशराशि से दिव्य स्वरूप एवं कमल पुष्पों की माला से सुशोभित हैं एवंविध

श्रीकृष्ण भगवान् के सहित रासेश्वरी श्रीराधा को सश्रद्ध प्रणति है॥४॥

(५)

श्रीरङ्गदेवी-ललिता-विशाखा-
चित्रादिकाऽऽलिनवकुञ्जसेव्याम्।
रासेश्वरीं रासविलासशीलां
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम्॥

श्रीरङ्गदेवी-श्रीललिता-श्रीविशाखा-श्रीचित्रा आदि अष्ट सखियों से नव निकुञ्ज में परिपूजित एवं रास विलास में परम प्रवीण रासेश्वरी वृन्दावनाधीश्वरी श्रीराधा श्रीकृष्ण भगवान् के संग में विराजित उनकी वन्दना करते हैं॥५॥

(६)

श्रीकृष्णराधां सुभगां निकुञ्जे
लीलाकरीं रासकरीं किशोरीम्।
प्राणप्रियां नित्यसखीप्रसेव्यां
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम्॥

श्रीनिकुञ्ज में अतिकमनीय नानाविध लीला परायण, रासविहारिणी किशोरी श्रीकृष्णप्रिया श्रीराधा जो प्राणप्रिया नित्यसखीजनों से सेवित श्रीहरि कृष्ण प्रभु के सहित श्रीराधा को प्रणाम करते हैं॥६॥

(७)

गोविन्द ! गोपाल ! हरे ! वदन्तीं
प्रभातकाले यमुनाप्रतीरे ।

रक्ताब्जपुष्पाऽच्छसुगुच्छहस्तां
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

लाल कमल का अति सुन्दर गुच्छा जिनके करारविन्द में सुशोभित है, और प्रातः समय श्रीयमुना के तटीय भाग पर हे गोविन्द ! हे गोपाल ! हे हरे ! इस प्रकार अपने प्रियतम का स्मरण करती हुई रसिकाराध्या श्रीराधा अपने हरि श्रीकृष्ण के संग उनको प्रणाम करते हैं ।।७।।

(८)

व्रजाऽऽलिवृन्दैश्च सदा सुगेयां
श्रीधाम्नि वृन्दाविपिने व्रजन्तीम् ।
ग्लौचन्द्रिकाशोभितदिव्यरूपां
नमामि राधां हरिणा च सार्द्धम् ।।

व्रजाङ्गना सखिजनों से सदा सेवित श्रीवृन्दावन धाम में विहार करती हुई और वह भी चन्द्रमा की चाँदनी में दिव्य स्वरूप से सुशोभित श्रीप्रिया राधा को श्रीकृष्ण भगवान् के सहित अभिनमन करते हैं ।।८।।

(९)

राधास्तवाष्टकं गेयं राधाभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीराधा भक्तिप्रद इस श्रीराधास्तवाष्टक जिसका प्रणयन उन्हीं कृपामयी सर्वेश्वरी श्रीराधा प्रिया की पावन प्रेरणा जन्य हमें निमित्त बनाकर यह प्रस्तुत हुआ है ।।९।।

श्रीसर्वेश्वर - स्तव

(१)

विधीशेन्द्रशेषैः समाराध्यमानं
कुमारैः प्रसेव्यं मुनीन्द्रादि-सद्भिः ।
भवोत्पत्तिहेतुं भवाऽम्भोधिसेतुं
भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

ब्रह्मा-शिव-इन्द्र-शेष आदि देवों से आराधित श्रीसनक-सन्दन-सनातन-सनत्कुमार महर्षियों द्वारा परिसेवित एवं देवर्षि श्रीनारद एवं सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु वरेण्य श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य द्वारा संसेवित तथा इस चराचरात्मक निखिल जगत् के एकमात्र मुख्य कारण इस भवसागर के उस पार जाने के परम सेतु स्वरूप अतीव मनोहर श्रीसर्वेश्वर प्रभु का भजन करते हैं।।१।।

(२)

प्रियाराधिकाश्रीप्रभाशोभमानं
व्रजे दिव्यकुञ्जे नरीनृत्यमानम् ।
परं ब्रह्म कृष्णं हृषीकेशमीशं
भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

श्रीराधाप्रियाजी की प्रभा से परम सुशोभित और व्रज की दिव्य कुञ्जों में ललित नृत्ययुक्त, हृषिकेश रूप एवं ईश स्वरूप अति कतनीय रूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु का हम भजन स्मरण करते हैं।।२।।

(३)

करराम्भोजवेणुं प्रियं पङ्कजाक्षं
कदम्बाऽऽम्र-जम्बू-निकुञ्जेषु मध्ये
सखीवृन्दसेव्यं खगैर्गीयमानं
भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

अरविन्द के सदृश जिनके नेत्र युगल हैं, श्रीकरकमलों में वंशी धारण किये हुए है । कदम्ब, आम, जामुन आदि की परम मनोहर निकुञ्जों के मध्य भाग में सखी परिकर द्वारा परिसेवित तथा विविध पक्षियों के कलरव से प्रगीयमान, परम सुभग स्वरूप श्रीसर्वेश्वर भगवान् को सर्वविध रूप से अभिनमन करते हैं।।३।।

(४)

महादिव्यवृन्दावने नित्यधाम्नि
सदा सौरिकूले लताकुञ्जरम्ये ।
मुदा शोभितं बर्हिपिच्छाऽच्छशीर्षं
भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

परम दिव्य नित्यधाम श्रीवृन्दावन में सतत श्रीयमुना पुलिन पर नानाविध तरुवरों विविध लताओं से परिपूर्ण अति रमणीय मयूर के सुन्दर पंख के धारण से अत्यन्त शोभायमान कमनीय रूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु को सर्वविधा प्रणाम अर्पित करते हैं।।४।।

(५)

असीमप्रभं धेनुयूथे मनोज्ञं
महारासलीलानितान्तप्रसन्नम् ।
प्रियाऽऽनन्दसिन्धौ निमग्नं रसेशं

भजेऽहञ्च सर्वेश्वरं मञ्जुरूपम् ।।

जिनका अत्यन्त प्रभाव है, कोटि-कोटि गोवृन्दों के पृष्ठ भाग में विहरण करते अतीव मनोहर स्वरूप एवं महारास लीला विहार में प्रमुदित मनस्क एवं रासेश्वरी प्रिया श्रीराधा के दर्शनानन्द सागर में निमज्जित रासेश्वर परम रुचिर स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु का हम भजन करने में तत्पर हैं।।५।।

(६)

सर्वेश्वरस्तवः श्रेयान् सर्वेश्वररतिप्रदः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पराभक्ति प्रदायक यह कल्याणकारी श्रीसर्वेश्वर स्तव जिसका प्रणयन इन्हीं सर्वज्ञ श्रीहरि का अनुपम प्रसाद है, उसमें निमित्त बनाया है भक्तिहीन जन को जो निश्चय ही यह नितान्तरूपेण अनुग्रह प्रसाद ही है।

(१)

राधाकृष्ण उपासना, श्रीवृन्दावन वास।
यमुना पावन दरश है, ''शरण'' रहो कर आस।।

(२)

व्रजमण्डल शोभा सुभग, श्रीवृन्दावन धाम।
अभिराजत श्रीयुगलवर, ''शरण'' दरश व्रज वाम।।

(३)

विविध सरोवर तरु लता, निर्मल यमुना नीर।
विहरत श्यामाश्याम नित, ''शरण'' सखीजन भीर।।

(४)

श्रीवृन्दावन कुञ्ज वन, तुलसी दरश अपार।
अगणित गोधन वसत है, ''शरण'' मिलत पय धार।।

(५)

तरुवर शोभा रुचिर है, सुरभित कुसुम अपार।
खगगन कलरव करत प्रिय, ''शरण'' मधुप गुञ्जार।।

(६)

राधे राधे रटत सब, व्रजवासी अविराम।
श्रीकालिन्दी कूल पर, ''शरण'' राधिका श्याम।।

(७)

व्रज वसुधा पर रसिकवर, करत युगल गुण गान।
सुर-मुनि वांछत वास नित, ''शरण'' धरत हिय ध्यान।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

द्वारा विरचित-

* ग्रन्थमाला *

प्रकाशित श्लोक सं.

१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर
   (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या ,,
२. श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ११८
३. उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक) ,,
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२) ,,
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ३९५
६. श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०५
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ५८
८. हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक) ,,
९. भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १३७
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १८६
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ४०
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, २२
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् ,, १५
   (संस्कृत-पद्यात्मक)

कुल हिन्दी पद सं० २७८२ कुल श्लोक सं० २२४४

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधा–सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय–व्याकरण–वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतु:सम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क–तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतु:सम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा–महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकश: श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाया को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वज्रयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन–जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम–संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो–रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश–देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण–संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत–कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन–चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते है। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषत: उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।